बातचीत

→ निबंध
→ बालकृष्ण भट्ट

Ajanta
Page No.
Date

बालकृष्ण भट्ट (आधुनिक काल)

- जन्म: 23 जून, 1844
- निधन: 20 जुलाई, 1914
- निवास-स्थान: इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
- माता-पिता: पार्वती देवी एवं बेनी प्रसाद भट्टा (व्यापारी)

- 1867 में प्रयाग के मिशन स्कूल से एंट्रेंस की परीक्षा दी। 1869 से 1875 तक मिशन स्कूल में अध्यापन। 1885 में प्रयाग के सी०ए०वी० स्कूल में संस्कृत का अध्यापन। 1888 में प्रयाग की कायस्थ पाठशाला इंटर कॉलेज में अध्यापक नियुक्त किंतु उग्र स्वभाव के कारण नौकरी छोड़नी पड़ी, और उसके बाद से लेखन कार्य पर ही निर्भर। भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रेरणा से 'हिंदी वर्द्धिनी सभा' प्रयाग के ओर से 1877 में 'हिंदी प्रदीप' नामक मासिक पत्र निकलना प्रारंभ किया। इसे वे 33 वर्षों तक चलाते रहे।

- उपन्यास: रहस्य कथा, नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान, गुप्त वैरी, रसातल यात्रा, उचित दक्षिणा, हमारी घड़ी, सद्भाव का अभाव।

- नाटक: पद्मावती, किरातार्जुनीय, वेणी संहार, शिशुपाल वध, नल दमयंती या दमयंती स्वयंवर, शिक्षादान, चंद्रसेन, सीता वनवास, पतित पंचम, मेघनाद वध, कस्टर सुम की एक नकल, बृहन्नला, इंगलैंडेश्वरी और भारत जननी भारतवर्ष और कलि, दो दूरदेशी, एक रोगी और एक वैद्य, रेल का विकट खेल, बालविवाह आदि।

- प्रहसन/अनुवाद: जैसा काम वैसा परिणाम, नई रोशनी का विष, आचार विडंबन आदि।

Ajanta
Page No.
Date

निबंध ÷ 1000 के आस-पास निबंध जिनमें सौ से ऊपर बहुत महत्वपूर्ण। 'भट्ट निबंधमाला' नाम से दो खंडों में एक संग्रह प्रकाशित।

बालकृष्ण भट्ट भारतेंदु युग के साहित्यकार थे।

भारतेंदु युग के साहित्य के अनुसार ÷ साहित्य केवल कल्पना-विलास और मनोरंजन की वस्तु नहीं है, अपितु वह 'जन समूह के चित के विकास का संवाहक' और जन संस्कृति के विकास प्रवाह का मूर्त वाङ्मय उपादन है जो गहन लोक संप्रक्ति से उपजता और दिशा पाता है।

* आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निबंधकार के रूप में बालकृष्ण भट्ट को अंग्रेजी साहित्य के एडीसन और स्टील की श्रेणी में रखा है।

जो कुछ मवाद या धुआँ जमा रहता है, वह बातचीत के जरिए भाप बनकर बाहर निकल पड़ता है।

स्पीच का उद्देश्य सुननेवालों के मन में जोश और उत्साह पैदा करना है।

Ajanta
Page No.
Date

बातचीत

अनेक प्रकार की शक्तियाँ जो वरदान की भाँति ईश्वर ने मनुष्य को दी हैं, उनमें वाक्शक्ति भी एक है। यदि मनुष्य में वाक्शक्ति न होती तो सब लोग लुंज-पुंज हो कोने में बैठे होते और जो कुछ सुख-दुख का अनुभव हम अपने इंद्रियों के द्वारा करते, उसे अवाक् होने के कारण आपस में एक दूसरे से कुछ न कह-सुन सकते।

वाक्शक्ति
बातचीत के अनेक कायदों में स्पीच (वक्तृता) और बातचीत दोनों हैं।

स्पीच ÷ स्पीच में वक्ता बड़े अंदाज से गिन-गिनकर पाँव रखता हुआ पुलपिट पर जा खड़ा होता है और पुण्याहवाचन या नांदीपाठ की भाँति घड़ियों तक साहबान मजलिस, चेयरमैन, लेडीज एंव जेंटिलमैन की बहुत सी स्तुति करे और तब वक्तृता का आरंभ करता है। जहाँ कोई चुटीली बात वक्ता महाशय के मुख से निकली कि ताली-ध्वनि से कमरा गूँज उठा। इसलिए वक्ता को कोई ऐसा मौका अपनी वक्तृता में लाना ही पड़ता है जिसमें करतलध्वनि अवश्य हो।

बातचीत ÷ बातचीत का कुछ ऐसा घरेलु ढंग है कि उसमें न करतलध्वनि का कोई मौका है, न लोगों के कहकहे उड़ाने की कोई बात रहती है। इसमें दो आदमी प्रेमपूर्वक संलाप कर रहे होते हैं। कोई चुटीली बात आ गई, हँस पड़े।

दो सहेलियों की बातचीत में मानो रस का सुख समुद्र उमड़ा चला आता है।

रॉबिंसन क्रूसो मि. को 16 वर्ष तक मनुष्य-मुख देख को नहीं मिला। कुत्ता, बिल्ली आदि जानवरों के बी में रह 16 वर्ष उपरांत उसने फ्राइडे के मुख से एक बात सुनी। यद्यपि उसने अपनी जंगली बोली में कहा था, पर उस समय रॉबिंसन को ऐसा आनंद हुआ मानो उसने नए सिरे से फिर से आदमी का चोला पाया। इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य की वाक्शक्ति में कहाँ तक लुभा लेने की ताकत है।

एडीसन का मत है कि असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि जब दो आदमी होते हैं तभी अपना दिल एक दूसरे के सामने खोलते हैं।

यौरप के लोगों में बात करने का हुनर है। 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' यहाँ तक बढ़ा है कि स्पीच और लेख दोनों इसे नहीं पाते।

सच है, जब तक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता।

बेन जानसन का यह कहना है कि बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है।

सबसे उत्तम तरीका बातचीत करने का यह कि आपने आप बात कर लिया करें।

दो से अधिक लोगों के बीच बातचीत केवल राम-रमौवल (केवल बात-चीत करना) कहलाता है।

कड़वक

↳ मलिक मुहम्मद जायसी

Ajanta
Page No.
Date

* मलिक मुहम्मद जायसी (भक्तिकाल)

- जन्म : 1492 (अनुमानत:)
- निधन : 1548 (अनुमानत:)
- निवास-स्थान : जायस, कब्र अमेठी, उत्तर प्रदेश
- पिता : मलिक शेख ममरेज (मलिक राजे अशरफ)
- गुरु : सूफी संत शेख मोहिदी और सैयद अशरफ जहाँगीर
- कृतियाँ : पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, कहरानामा (मस्री बाईसी), मसल या मसलानामा (खंडित प्रति प्राप्त), चंपावत, होलीनामा तथा इतरावत

- जायसी चेचक के कारण रूपहीन तथा बाईं आँख और कान से वंचित थे।
- वे 'प्रेम की पीर' के कवि थे अर्थात वे प्रेममार्गी शाखा के कवि थे।
- वे कविता 'अवधी' भाषा में लिखते थे।
- वे 'सूफी' कवि हैं।

कड़बक

एक नैन कबि मुहमद गुनी। सोई बिमोह जेई कबि सुनी
एक नैन के होते हुए भी जायसी गुणी (गुणवान) हैं।
→ जो भी उनकी काव्य को सुनता है वो मोहित हो जाता है

चाँद जइस जग बिधि औतारा। दीन्ह कलंक, कीन्ह उजि
जग सूझा एकइ नैनाहाँ। उवा सूक अस नखतन्ह माहाँ
ईश्वर ने उन्हें चंद्रमा की तरह इस धरती पर उतारा
→ लेकिन जैसे चंद्रमा में कमी है वैसे ही कवि में भी
फिर भी कवि चंद्रमा की तरह अपने काव्य की प्रकाश
पूरे संसार में फैले रहे हैं। जिस प्रकार अकेला शुक्र
नक्षत्रों के बीच उदित है उसी प्रकार कवि ने भी अपनी
एक ही आँख से दुनिया को भली-भांति समझ लिया है।

जौं लहि अंबहि डाभ न होई। तौं लहि सुगंध बसाइ न
जबतक आम में नुकीली डाभ (मंजरी) नहीं होता तबतक सोइ
→ उसमे सुगंध नहीं आता।

कीन्ह समुद्र पानि जौं खारा। तौ अति भएउ असूझ अपारा
समुन्द्र का पानी खारा है इसलिए ही वह असूझ और अपार
→ है।

जौं सुमेरु तिरसूल बिनासा। भा कंचनगिरि लाग अकासा
जबतक सुमेरु पर्वत को त्रिशूल से नष्ट नहीं किया गया
→ तबतक वो सोने का नहीं हुआ।

जौ लहि घरी कलंक न परा। काँच होई नहिं कंचन करा।
→ जबतक धरिया (सोना गलाने वाला पात्र) में सोने को गलाया नहीं जाता तबतक वह कच्ची धातु सोना नहीं होती।

एक नैन जस दरपन औ तेहि निरमल भाउ। सब रूपवंत गहि मुख जोवहिं कइ चाउ॥
→ कवि एक नैन के होते भी दर्पण की तरफ निर्मल और स्वच्छ भाव वाले हैं और उनके इसी गुण की वजह से बड़े-बड़े रूपवान लोग उनके चरण पकड़ कर कुछ पाने की इच्छा लिए उनके मुख की तरफ ताका करते हैं।

मुहमद यहि कबि जोरि सुनावा। सुना जो पेम पीर गा पावा
→ जोरी लाइ रकत कै लेई। गाढ़ी प्रीति नैन जल भेई।
मैंने (मुहम्मद) यह काव्य रचकर सुनाया है और जिसने भी इसे सुना उसे प्रेम की पीड़ा का अनुभव हुआ। मैंने इस काव्य को रक्त की लेई लगाकर जोड़ा है तथा गाढ़ी प्रीति को आँसुओं के जल में भिंगोया है।

औ मन जानि कबित अस कीन्हा। मकु यह रहै जगत महँ चीन्हा
कहँ सो रतनसेनि अस राजा। कहँ सुवा असि बुधि उपराजा
कहँ अलाउदीन सुलतानू। कहँ राघौ जेइँ कीन्ह बखानू।
कहँ सुरूप पदुमावति रानी। कोइ न रहा जग रही कहानी।
→ मैंने इस काव्य के रचना यह जानकार किया है, कि मेरे ना रहने के बाद इस संसार में मेरी आखिरी निशानी यही हो। अब न वह रत्नसेन है और न वह रूपवती पद्मावती न वह ~~बुद्धि बुद्धिमान~~ बुद्धिमान सुआ है और न वह राघवचेतन या अलाउद्दीन है। आज इनमें से कोई भी नहीं लेकिन यश के रूप में इनकी कहानी रह गई है।

धनि सो पुरुष जस कीरति जासु। फूल मरै पै मरै न
वह पुरुष धन्य है जिसकी कीर्ति और प्रतिष्ठा
→ इस संसार में है। और यह उसी तरह रह जाती है
जिस प्रकार पुष्प के मुरझा जाने पर भी उसक
सुगंध रह जाता है।

केइ न जगत जस बेंचा केइ न लीन्ह जस मोल।
जो यह पढ़ कहानी हम सेंवरे दुइ बोल॥
→ इस संसार में यश न तो किसी ने बेचा है और
न ही किसी ने खरीदा है। जो मेरे (कवि) कलेजे के
खून से रचित कहानी को पढ़ेगा वह हमें दो शब्दों मे
याद रखेगा।

सूरदास पद

Ajanta
Page No.
Date

सूरदास

* जन्म ÷ 1478 (अनुमानित)
निधन ÷ 1583
जन्म-स्थान ÷ दिल्ली के निकट 'सीही' नामक ग्राम
निवास-स्थान ÷ ब्रजक्षेत्र में क्रमशः गऊघाट, वृंदावन एवं पारसोली ग्राम
अभिरुचि ÷ पर्यटन, सत्संग, कृष्णभक्ति एवं वैराग्य।
दीक्षागुरु ÷ महाप्रभु वल्लभाचार्य
जन्म से अंधे थे अथवा बड़े होने पर दोनों आंखे जाती रही।
रचनाएँ ÷ सुरसागर, सहि

* पद

(1)

जागिए, ब्रजराज कुँवर, कँवल-कुसुम फूले।
कुमुद-वृंद संकुचित भए, भृंग लता भूले।
तमचुर खग-रोर सुनहु, बोलत बनराई।
रँभति गो खरिकनि में, बछरा हित धाई।
बिधु मलीन रवि प्रकास गावत नर-नारी।
सूर स्याम प्रात उठौ, अंबुज-कर-धारी॥

⇒ इस पद में सूरदास जी मातृ स्नेह का भाव प्रदर्शित कर रहे हैं। माता यशोदा अपने पुत्र कृष्ण को सुबह होने पर जगा रही है। वह कहती है कि हे ब्रज के राजकुमार! अब जाग जाओ। कमल पुष्प खिल गए हैं तथा कुमुद भी बंद हो गए हैं। भ्रमर कमल पुष्पों पर मंडराने लगे हैं। सवेरा होने के प्रतीक मुर्गे बांग देने लगे हैं और ~~पक्षि~~ पक्षियों व चिड़ियों का कलरव प्रारंभ हो गया है। गौशाला में गउएं बछड़ों के लिए रंभा रही हैं। चंद्रमा का प्रकाश मलिन हो गया है तथा सूर्य निकल आया है। नर नारियां प्रातः कालीन गीत गा रहे हैं। अतः हे श्यामसुंदर! अब तुम उठ जाओ। हे हाथों में ~~कल~~ कमल धारण करने वाले कृष्ण उठ जाओ।

जेंवत स्याम नंद की कनियाँ।
कछुक खात, कछु धरनि गिरावत, छबि निरखति नंद-धनियाँ
बरी, बरा बेसन, बहु भाँतिनि, व्यंजन बिबिध, अगनियाँ।
डारत खात, लेत अपनैं कर, रुचि मानत दधि दोनियाँ।
मिस्री, दधि, माखन मिस्रित करि, मुख नावत छबि धनियाँ।
आपुन खात, नंद-मुख नावत, सो छबि कहत न बनियाँ।
जो रस नंद-जसोदा बिलसत, सो नहिं तिहु भुवनियाँ।
भोजन करि नंद अचमन लीन्हौ, माँगत सूर जुठनियाँ।।

→ इस पंक्ति में सूरदास जी मातृ-पितृ स्नेह का भाव प्रदर्शित कर रहे हैं। श्री कृष्ण नंद की गोद में बैठकर भोजन कर रहे हैं। वे कुछ खाते है कुछ धरती पर गिरते है तथा इस मनोरम दृश्य को माँ यशोदा देख रही है। उनके लिए अनगिनत प्रकार के व्यंजन जैसे बेसन के बाड़े, बरियाँ इत्यादि बने हुए है। वे अपनी हाथों से कुछ खाते है और कुछ गिराते है लेकिन उनकी रुचि केवल दही के पात्र मे अत्यधिक होती है। वे मिश्री, दही और मक्खन को मिलाकर अपने मुख में डालते है
यह मनोरम दृश्य देखकर माँ यशोदा धन्य हो जाती है। वे खुद भी खाते है और कुछ नंद जी के मुंह में भी डालते हैं। ये मनोरम छवि का वर्णन करते नहीं बनता। इस दिव्य क्षण का जो आनंद नंद और यशोदा को मिल रहा है यह तीनों लोको में किसी को प्राप्त नहीं हो सकता। भोजन करने के बाद नंद और श्री कृष्ण कुल्ला करते है और सूरदास उनका जूठन मांग रहे है।

उसने कहा था → कहानी

→ चंद्रधर शर्मा गुलेरी

चंद्रधर शर्मा गुलेरी

- जन्म ÷ 7 जुलाई, 1883
- निधन ÷ 12 सितंबर, 1922
- जन्म-स्थान ÷ जयपुर, राजस्थान
- मूल-निवास ÷ 'गुलेर' नामक ग्राम, जिला ÷ कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश
- पिता ÷ पं० शिवराम
- शिक्षा ÷ 1899 में इलाहाबाद तथा कोलकता विश्वविद्यालयों से क्रमशः एंट्रेंस तथा मैट्रिक, 1901 में कोलकता विश्वविद्यालय से इंटरमीडिएट, 1903 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी० ए०।
- वृति ÷ 1904 में जयपुर दरबार की ओर से खेतड़ी के नाबालिग राजा जयसिंह के अभिभावक बनकर मेयो कॉलेज, अजमेर में आ गए। जयपुर भवन छात्रावास के अधीक्षक। 1916 में संस्कृति विभाग के अध्यक्ष। अंतिम दिनों में मदन मोहन मालवीय के निमंत्रण पर बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में प्राच्य विभाग के कार्यवाहक प्राचार्य तथा मनींद्र चंद्र नंदी पीठ के प्रोफेसर।
- संपादन ÷ समालोचक, काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका।
- कहानी ÷ सुखमय जीवन (1911), बुद्धू का काँटा (1911) और उसने कहा था (1915)।
  - → 'नील का पत्थर' हिंदी कहानी के विकास में सिद्ध हुआ।
  - फिल्म ÷ विमल राय.

उसने कहा था।

~~लहना~~

लड़की के मुँह से "मेरी ~~कुड़माई~~ कुड़माई हो गई" सुनने के बाद जब लहना सिंह चन घर की ओर चला; उसने रास्ते में एक लड़के को मोरी में ढकेल दिया, एक छाबड़ी वाले की दिन भर की कमाई खोई एक कुत्ते को पत्थर मारा और एक गोभीवाले के ठेले में दूध उड़ेल दिया। सामने नहाकर आती हुई वैष्णवी से टकराकर अंधे की उपाधि पाई। तब कहीं घर पहुँचा।

पात्र :- (माँझे)

लहना सिंह, बोधासिंह (सूबेदार का बेटा), सूबेदार हजारासिंह, सूबेदारनी वजीरा सिंह

(मगरे)

एक तुरकी मौलवी मेरे गाँव (लहना सिंह के गाँव) में आया था। औरतों को बच्चे होने की तबीज बाँटता था। और बच्चों को दवाई देता था। चौधरी के बड़ के नीचे मंजा बिछाकर हुक्का पीता रहता था और कहता था जर्मनीवाले बड़े पंडित हैं। वेद पढ़-पढ़कर उसमें से विमान चलाने की विद्या जान गए हैं। गौ को नहीं मारते। हिंदुस्तान में आ जाएँगे तो गौ-हत्या बंद कर देंगे। मंडी के बनियों को बहकाता था कि डाकखाने से रुपए निकाल लो, सरकार का राज्य जाने वाला है। डाक बाबू पोल्हूराम भी डर गया था। मैंने ने मुल्लाजी की दाढ़ी मूँड दी थी और गाँव से बाहर निकालकर कहा था जो मेरे गाँव में अब पैर रखा तो...

फ्रॉस और बेल्जियम - 68वीं सूची - मैदान में घावों से मरा न० 77 (सिख राइफल्स जमादार लहनासिंह)

कारक

Ajanta
Page No.
Date

कारक के आठ भेद हैं।

1. कर्ता ÷ ने
2. कर्म ÷ को
3. करण ÷ से (के द्वारा)
4. सम्प्रदान ÷ को, के(लिए)
5. अपादान ÷ से (अलग होने के अर्थ में)
6. संबंध ÷ का, की, के, रा रे री
7. अपवाद ÷ जहाँ पर कोई वस्तु किसी को सदा के लिए न दी जाए।
8. ~~अपवाद~~ अपवाद ÷ जहाँ दो व्यक्तियों, वस्तुओं की तुलना की जाए।
7. अधिकरण ÷ में, पर (स्थानसूचक)
8. संबोधन ÷ अरे, हे, अहो, रे (पुकारने के लिए)

17.10.25

रस्सी का टुकड़ा → कहानी
→ गाइ - डि मोपासाँ

* गाइ - डि मोपासाँ (1850 - 1893)
निवास स्थान : फ्रांस
1870 - 1890 के बीच उनकी लगभग तीन सौ कहानियाँ छह उपन्यास, तीन यात्रा - पुस्तके और कविता की एक पुस्तक प्रकाशित हुए
अपने लेखन में उन्होंने बुर्जुआ समाज के चाल - चरित्र का वर्णन किया है।

* रस्सी का टुकड़ा

होशेकम (किसान) — मलांदे (घोड़ों की कांठी बनाता था)

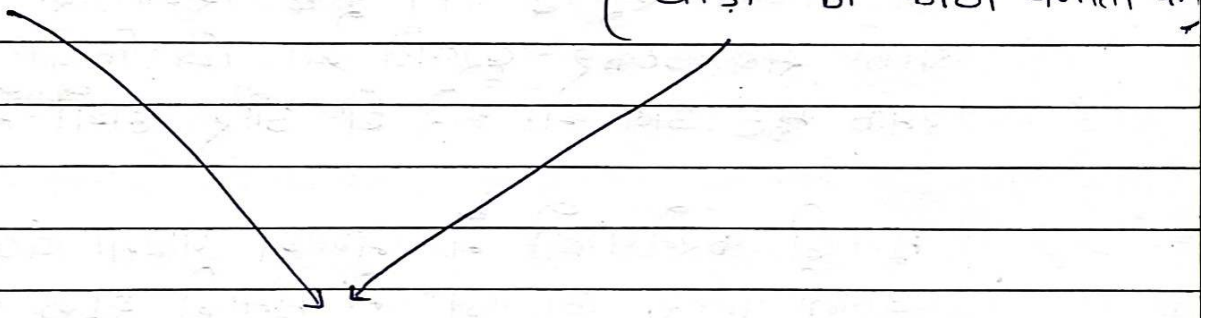

दोनों मित्र थे पर कुछ दिनों पहले घोड़े की एक जीन को लेकर उनमें विवाद हुआ था।

ब्रीत का मैत्र होशेकम गोदरविल आया था। चौराहे के ओर जाते समय जमीन पर उसने रस्सी का एक टुकड़ा देखा। उसने उसे उठा लिया। उसका मानना था कि हर काम लायक चीज को उठा लेना चाहिए।

रस्सी का टुकड़ा उठाते समय उसके नजर मैत्र मलांदे पर पड़ी जो अपने घर की ढेहरी पर खड़ा उसे घूर रहा था।

होशेकम को यह सोचकर बड़ी शर्म आई कि उसके दुश्मन ने उसे धूल में पड़ा रस्सी का टुकड़ा उठाते देख लिया है। होशेकम ने रस्सी के टुकड़े को जल्दी पहले अपनी कमीज के अंदर छुपाने की कोशिश की, फिर उसे अपनी पतलून की जेब में रख लिया, और यह दिखाया कि जैसे वह अब भी जमीन पर कुछ ढूँढ रहा है कि उसने ऐसे दिखाया जैसे उसे कुछ न मिला हो और बाजार की ओर चल दिया।

जूर्क का सार्वजनिक भोजनालय लोगों से भरा हुआ था। अचानक बाहर अहाते में नगाड़ा पीटने की आवाज सुनाई दी। कुछ स्थितप्रज्ञ लोगों को छोड़ बाकी सब उठकर दरवाजे या खिड़कियों की ओर भागे उनके मुँह अब भी भरे थे और हाथों में रुमाल थे।

मुनादी करनेवाले ने नगाड़ा पीटना बंद कर दिया और अपनी कर्कश आवाज में मुनादी शुरू कर दी:

गोदरविल के सभी निवासियों और बाजार में मौजूद सभी लोगों को सूचित किया जाता है कि आज सुबह नौ से दस बजे के बीच बेंगोविल जानेवाली सड़क पर एक काले चमड़े का बटुआ खो गया है जिसमें पाँच सौ क्रैक और व्यापार से संबंधित जरूरी कागजात हैं। पानेवाले से गुजारिश है कि वह इसे कौंसिल मेयर के कार्यालय को या फिर मानविल के मैत्र कोरल्यून हुलब्रेक को लौटा दें। ऐसा करने वाले को बीस क्रैक का इनाम दिया जाएगा।

फिर वह चला गया।

Ajanta
Page No.
Date

खाना खत्म करके वे कॉफी पी रहे थे तभी देहरी पर एक सशस्त्र पुलिस अफसर प्रकट हुआ। उसने पूछा "क्या ब्रोत के रहनेवाले श्री मैत्र होशेकम यहाँ पर मौजूद हैं? मेज के दूसरे सिरे पर बैठे मैत्र होशेकम ने जवाब दिया "हाँ, मैं यहाँ हूँ।" अफसर ने कहा "मैत्र होशेकम, क्या आप मेरे साथ मेयर के कार्यालय में चलने की जहमत उठाएँगे? मेयर आपसे बात करना चाहते हैं। किसान परेशान हो उठा। उसने गिलास एक घूँट में खाली किया और उठकर चल दिया।

मेयर हत्थेवाली कुर्सी पर बैठा उसका इंतजार कर रहा था। वह इस इलाके का नोटरी भी था। वह एक मोटा और गंभीर किस्म का इंसान था जिसे भारी-भरकम शब्द बोलने की आदत थी। उसने कहा "मैत्र होशेकम, आज सुबह आपको बेंजेविल जानेवाली सड़क पर मानविल के मैत्र हुलब्रेक का गिरा हुआ बटुआ उठाते हुए देखा गया था। किसान भौंचक्का सा मेयर को देख रहा था और 'ईमान कसम मैंने इस बारे में कभी सुना ही नहीं।

"लेकिन तुम्हें ऐसा करते देखा गया है।"

"देखा गया है, मुझे? किसने कहा कि उसने मुझे देखा?"

"मौस्यू मलांदे, काठी बनानेवाले ने।"

"ओह, तो उसने मुझे देखा, अंधा कहीं का। उसने मुझे यह रस्सी उठाते देखा था मौस्यू मेयर।" लेकिन मेयर ने संदेहभरी दृष्टि उस पर डाली और कहा "तुम चाहते हो मैत्र होशेकम, कि मैं इस बात पर विश्वास कर लूँ कि मैत्र मलांदे जो एक विश्वसनीय व्यक्ति है, इस रस्सों को बटुआ समझ बैठा।

मौस्यू मलांदे को बुलाया गया जिसने अपने आरोप को दोहराया। वे एक घंटे एक-दूसरे को भला-बुरा कहते रहे। मैत्र होशेकम के अनुरोध पर उसकी तालाशी ली गई पर कुछ ना मिला। मेयर ने उसे इस चेतावनी के साथ छोड़ दिया कि वह सरकारी वकील से बात करके फिर कोई आदेश जारी करेगा। यह खबर आग की तरह चारों ओर फैल गई थी।

गोदरविल से घर आते समय वह जगह-जगह रुककर लोगों को रस्सी की कहानी सुनता था पर लोग उसपर भरोसा न करते और कहते "बुढ़ापे में ऐसा करते शर्म नहीं आती, चले जाओ यहाँ से"। वह रातभर बेचैन रहा

अगले दिन दोपहर करीब एक बजे यीमानाविल के पशु व्यापारी मैत्र ब्रैंतो के एक कर्मचारी मारियस पोमेल ने भरा हुआ बटुआ मानविल के मैत्र-हुलब्रेक को लौटा दिया। यह खबर देखते ही देखते पुरे इलाके में फैल गई। होशेकम को भी इसकी सूचना दी गई। सुखद अंत के साथ अपनी कहानी फिर सबको सुनाने लगा।

अगले सप्ताह मंगलवार को वह गोदरविल के बाजार में गया। उसे कोई काम नहीं था पर वह बस इसलिए गया था ताकि इस मामले के बारे में लोगों से बातें कर सके।

वह ग्रूदे के भोजनालय में जाकर बैठा और वहाँ भी उसने अपनी बात छेड़ दी। मौर्न विलियस से आए घोड़े के एक सौदागर ने आवाज लगाई "चलो, चलो चालक बूढ़े, ये तो बड़ी पुरानी चाल है। मैं तुम्हारे रस्सी के टुकड़े के बारे में सबकुछ जानता हूँ।" होशेकम ने हकलाते हुए कहा, लेकिन अब तो बटुआ मिल गया है।"

दूसरे आदमी ने जबाब दिया, "चुप रहो बुढ़ऊ, एक बटुआ उठता है और दूसरा उसे लौटता है। जो भी हो इसमें तुम जरूर शामिल हो। होशेकम अवाक् रह गया। उसे सारी बात समझ में आ गई। वह क्षोभ और शर्मिंदगी से भरा वापस लौटा।

उसने फिर एक बार सारा घटनाक्रम लोगों को बताना शुरू किया। पर लोग उस पर उतना ही कम विश्वास करते।

दिसंबर का अंत आते-आते उसने बिस्तर पकड़ लिया। जनवरी के शुरुआती दिनों में उसकी मौत हो गई। मरने के पहले तक वह सन्निपात में भी अपनी बेगुनाही का दावा करता रहा और दोहराता रहा, "रस्सी का एक टुकड़ा, रस्सी का एक टुकड़ा --- देखिए -- यह रहा, मोस्यु मेयर

17.10.25

संधि

संधि के तीन प्रकार है।

(1) स्वर संधि

स्वर + स्वर

ex:- विद्या + आलय

स्वर संधि के पाँच प्रकार है।

↳ दीर्घ, गुण, यण, वृद्धि और आयादि संधि

(2) व्यंजन संधि

↳ व्यंजन + व्यंजन + स्वर

ex:- शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र

(3) विसर्ग संधि

विसर्ग(:) + स्वर या व्यंजन

ex:- मन: + अनुकूल = मनोनुकूल

18.10.25

कवित

→ भूषण

Ajanta
Page No.
Date

* भूषण (रीतिकाल, वीररस)

- जन्म ÷ 1613
- निधन ÷ 1715
- जन्म-स्थान ÷ तिकवाँपुर, कानपुर, उत्तर प्रदेश
- पिता ÷ रत्नाकर त्रिपाठी
- ~~भूषण~~ उपनाम ÷ भूषण, चित्रकूट के सोलंकी राजा रुद्रसाह ने इन्हें 'कवि भूषण' की उपाधि दी थी। आगे उपनाम भूषण इतना प्रसिद्ध हुआ कि मूलनाम विस्मृत हो गया।
- प्रमुख आश्रयदाता ÷ छत्रपति शिवाजी, शिवाजी के पुत्र शाहू-जी एंव पन्ना के बुंदेला राजा ~~छत्रशा~~ छत्रसाल।
- विशेष ÷ रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि चिंतामणि त्रिपाठी और मतिराम भूषण के भाई के रूप में जाने जाते है।
- कृतियाँ ÷ शिवराज भूषण (384 छंदो में 105 अलंकारों का निरूपण और छत्रपति शिवाजी की प्रशस्ति करनेवाले मुक्तकों का संग्रह)। शिवा बावनी (52 मुक्तकों में छत्रपति शिवाजी की वीरता का बखान)। छत्रसाल दशक (10 छंदो में महाराज छत्रसाल की वीरता यशोगान)। ये तीन कृतियाँ अप्राप्त है: भूषण हजारा, भूषण उल्लास, दूषण उल्लास।

* कवित्त

इंद्र जिमि जंभ पर बाड़व ज्यौं अंभ पर,
रावन सदंभ पर रघुकुल राज है।
पौंन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर,
ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुम-दंड पर चीता मृग-झुंड पर,
भूषण बितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
यौं मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज है।

⇒ इस पंक्ति/छंद/पद में भूषण शिवाजी के वीरता का बखान करते हुए कहते है कि शिवा का मलेच्छ पर उसी प्रकार राज है जिस प्रकार इंद्र का यम पर, समुन्द्र की अग्नि का पानी पर, राम का दंभ से भरे रावण पर हवाओं का बादल पर, भगवान शिव का रति के पति पर (काम देव पर), परशुराम का सहस्रबाहु पर, जंगल की आग का वृक्ष की डालों पर, चीता का मृग झुंड पर ~~हाथी~~ हाथी पर सिंह का, उजाले का अंधेरे और कृष्ण का ~~रक्त~~ कंस पर है।

निकसत म्यान ते मयूखैं प्रलै-भानु कैसी,
फारैं तम-तोम से गयंदन के जाल को।
लागति लपकि कंठ बैरिन के नागिनि सी,
रुद्रहि रिझावै दै दै मुंडन की माला को।
लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहु बली,
कहाँ लौं बखान करौं तेरी करवाल को।
प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि,
कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल को।

⇒ इस पंक्ति/छंद/पद में भूषण ने छत्रसाल की वीरता, धीरता और पौरुष का वर्णन किया है कवि कहते हैं कि छत्रसाल की तलवार म्यान से इसप्रकार निकलती है जैसे प्रलयंकारी सूर्य से उसकी किरणें निकलती है तथा वह गयंद अर्थात हाथियों के जाल को इस प्रकार तितर-बितर कर देती है जैसे सूर्य की किरणें अंधेरे को। हे राजन आपकी तालवार शत्रुओं के गर्दन से नागिन की तरह लिपट जाती है और रुद्र (शिव) को प्रसन्न करने के लिए उन्हें मुंडों की माला अर्पित कर रही है। हे बलिस्त और भुजावाले महाराज छत्रसाल! मैं अपकी तलवार का कहाँ तक बखान करूं? आपकी तलवार अत्यंत प्रलयंकारी है जो शत्रुओं के समूह को नष्ट कर रही है और ऐसा प्रतीत होता है जैसे काली को प्रसन्न करने के लिए प्रसाद देती है।

तिरिछ

→ कहानी

→ उदय प्रकाश

उदय प्रकाश

- जन्म ÷ 1 जनवरी 1952
- जन्म-स्थान ÷ सीतापुर, अनूपपुर, मध्य प्रदेश
- शिक्षा ÷ बी० एससी०; एम० ए० (हिंदी), सागर विश्वविद्यालय सागर, मध्य प्रदेश

- वृत्ति ÷ 'दिनमान' के संपादन विभाग में कार्य, 'रंडमेल' (नई-दिल्ली) में सहायक संपादन, अंग्रेजी पत्रिका 'एमिनेंस' का संपादन।

- कहानी ÷ दरियाई घोड़ा, तिरिछ, और अंत में प्रार्थना, पॉल गोमरा का स्कूटर, पीली छतरी वाली लड़की, दत्तात्रेय के दुख, अरेबा-परेबा, मोहनदास, मेंगोसिल।

- कविता संग्रह ÷ सुनो कारीगर, अबूतर-कबूतर, रात में हारमोनियम

- अनुवाद ÷ कला-अनुभव, इंदिरा गाँधी की आखिरी लड़ाई, लाल घास पर नीले घोड़े, रोम्याँ रोलाँ का भारत। ईश्वर की आँख (निंदा-आलोचना)

समास

समास (6:)

① तत्पुरुष ② अव्ययीभाव ③ कर्मधारय ④ द्वंद
⑤ द्विगु ⑥ बहुव्रीहि

(द्वंदि अब तक)

① अव्ययीभाव समास
↳ + उपसर्ग

e.g. अनु, यथा, निर्, प्र, प्रति, आ

e.g. यथासंभव, अनुरूप, प्रतिदिन, आजन्म

• अगर किसी शब्द में पुनरावृति हो वह अव्ययीभाव समास होगा। उदा०: घर-घर, रातो-रात

② तत्पुरुष समास
↳ समास को विग्रह करने पर कारक चिन्ह ~~लुप्त~~ यशप्राप्त ÷ यश को प्राप्त

e.g. मनचाहा ÷ मन को चाहा
राजपुत्र ÷ राजा का पुत्र

Note÷ दूसरा पद प्रधान होता है।

③ कर्मधारय समास
↳ प्रथम पद दूसरे पद की विशेषता बताता है।

Note÷ दूसरे पद की तुलना हो या 'है जो' के समान विग्रह के समय आए

चरणकलम ÷ कमल के समान चरण
कमलनयन ÷ कमल के समान नयन
महानपुरुष ÷ महान है जो पुरुष

(4) द्वन्द्व ~~समास~~ समास
↳ दोनों पद प्रधान
↳ विग्रह करने पर या, अथवा, और, -
e.g. माता - पिता = माता और पिता
नदी - नाले
ऊंच - नीच

(5) द्विगु समास
↳ प्रथम पद संख्यावाचक
e.g. तिरंगा, नवरात्र, त्रिकोण

(6) बहुव्रीहि
↳ ~~कोई पद~~ दो पद प्रधान न हो
↳ दोनों पद मिलकर तीसरे पद की ओर संकेत करें।
e.g. लंबोदर = लंबा है जिसका उदर (गणेश)
गंगाधर = गंगा को धारण करने वाला (शिव)
नीलकंठ = नीला है जिसका कंठ (शिव

लिंग

Ajanta
Page No.
Date

पुल्लिंग
उदाहरण ÷ पिता, भाई, लड़का, पेड़, शिव, बैल -

(1) कुछ संज्ञाएँ हमेशा पुल्लिंग रहती है -
खटमल, भेड़िया, खरगोश, चीता, मच्छर, पक्षी

(2) समूहवाचक संज्ञा
→ मण्डल, समाज, दल, समूह, वर्ग

(3) दिनों के नाम

(4) महीनों के नाम
अपवाद (जनवरी, मई, जुलाई)

(5) पर्वतों के नाम

(6) देशों के नाम & नगर के नाम

(7) नक्षत्रों व ग्रहों के नाम
अपवाद ÷ पृथ्वी

(8) धातुओं के नाम

(9) अनाज के नाम
अपवाद ÷ मक्की, ज्वार, अरहर, मूँग।

(10) रत्नों के नाम

(11) फूलों के नाम

(12) द्रव पदार्थों के नाम
अपवाद - चाय, कॉफी, लस्सी, चटनी)

(13) समय

(14) द्वीप
↳ अंडमान - निकोबार

(15) सागर के नाम

(16) वर्णमाला
अपवाद: इ, ई, ऋ

(17) शरीर के अंग
(अपवाद: जीभ, आँख, नाक, उँगलियाँ

(18) आकारान्त संज्ञा
↳ गुस्सा, चश्मा, पैसा छाता

स्त्रीलिंग

(1) कुछ संज्ञाएँ हमेशा स्त्रीलिंग रहती हैं - मक्खी, कोयल, मछली, तितली, मैना

(2) स्त्रीलिंग शब्दों के अंतर्गत नक्षत्र

क्रिया

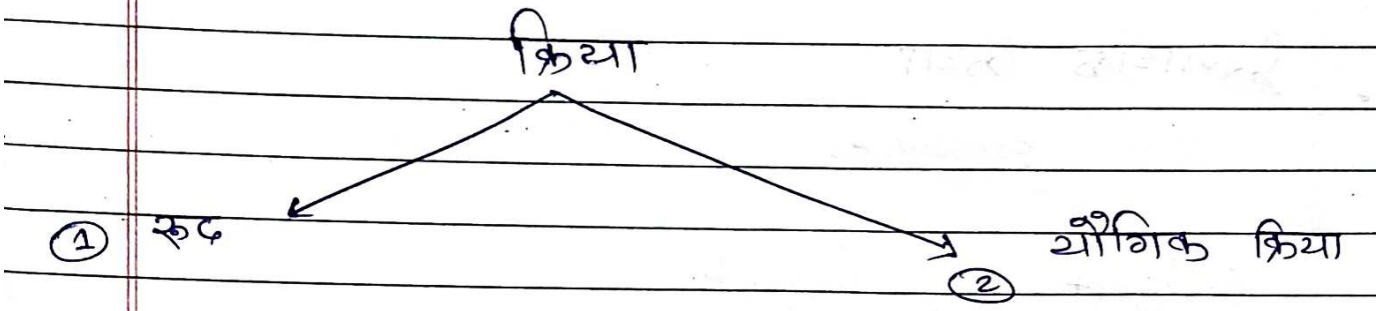

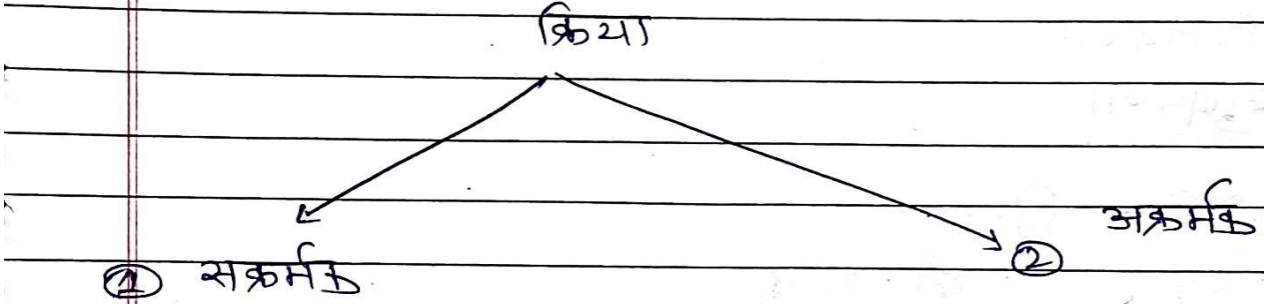

① रूढ़ क्रिया
↳ मूल धातु से
लिखना, खाना

e.g.

② यौगिक
↳ यौगिक धातु से
पढ़वाना, बताना, लिखवाना

e.g

① अकर्मक
↳ कर्म ✗
सॉंप रेंगता है।

e.g.

② सकर्मक
↳ कर्म ✓
~~मैं लेख लिखता हूँ।~~ मैं लेख लिखता हूँ।

e.g.

- प्रेरणार्थक क्रिया

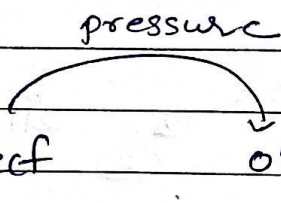

- उठाना → उठवाना
- दिलवाना
- सुलवाना

- यौगिक क्रिया
  ↳ दो धातु

e.g. सोना - धोना, चलना - फिरना

- नामधातु क्रिया
  ↳ संज्ञा या सर्वनाम से

ठंड → ठण्डाना

उच्चारण स्थान

Page No.
Date

- कण्ठ - कवर्ग, अ, आ, ह, अः
- तालु ÷ चवर्ग, इ, ई, श, य
- मूर्द्धा ÷ टवर्ग, ऋ, ष, र
- दन्त ÷ तवर्ग, ऌ, स, ल
- ओष्ठ ÷ पवर्ग उ, ऊ

- नासिका - अं, ङ, ञ, ण, न, म

- ए, ऐ ÷ अ + इ
  ↳ कण्ठ - तालु

- ओ, औ ÷ अ + उ
  ↳ कण्ठ - ओष्ठ

- व → दन्तोष्ठ

शब्द

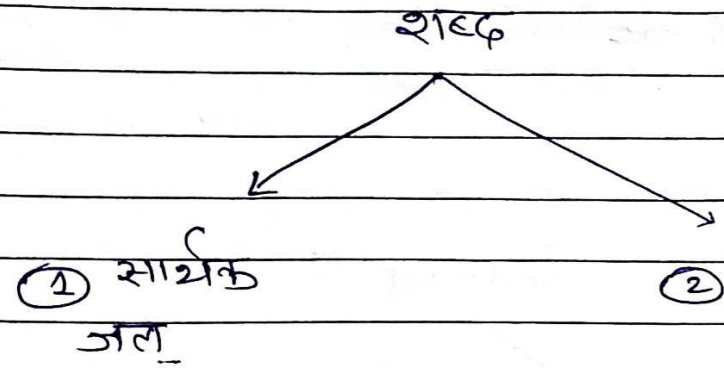
शब्द
① सार्थक
जल
② निरर्थक
लज

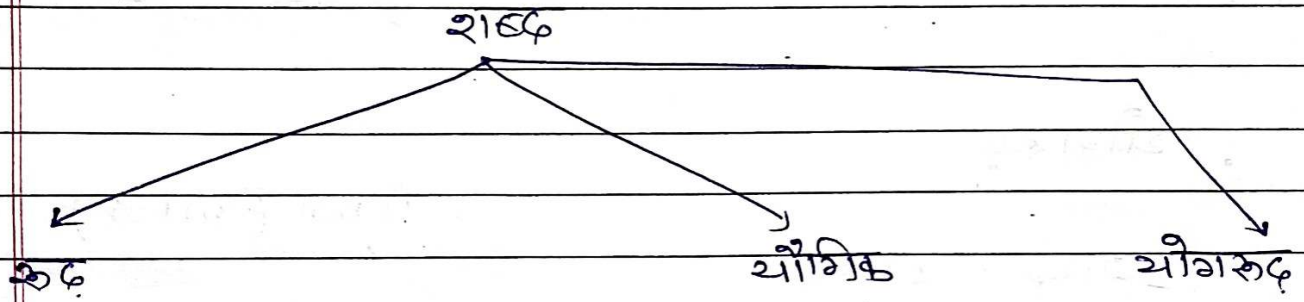
शब्द
रूढ़
यौगिक
योगरूढ़

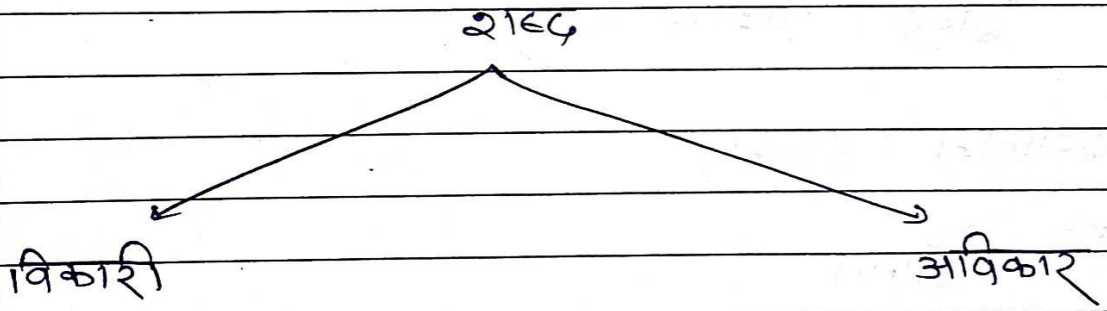
शब्द
विकारी
अविकार

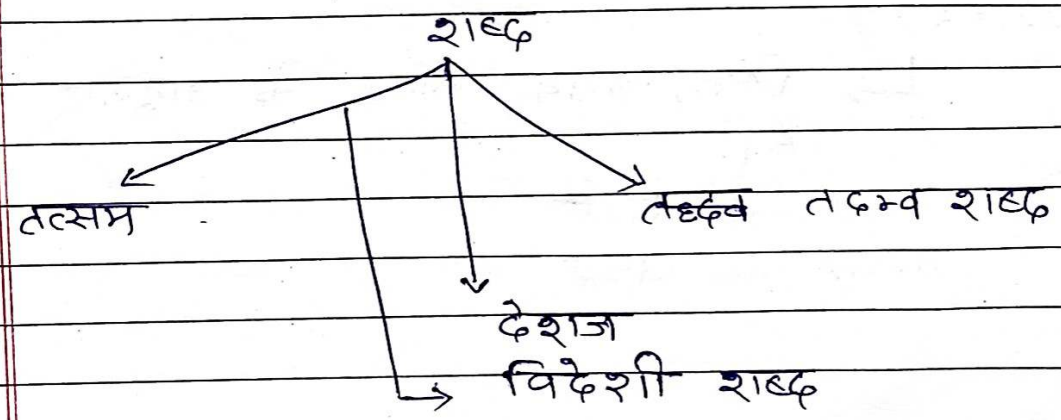
शब्द
तत्सम
तद्भव तद्भव शब्द
देशज
विदेशी शब्द

- रूढ़ शब्द
  - कल, जल, रोटी etc

e.g.

- यौगिक
  - ↳ शब्द

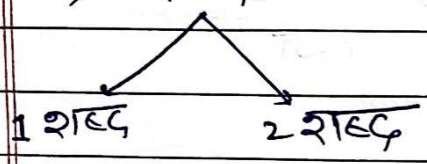

देवालय

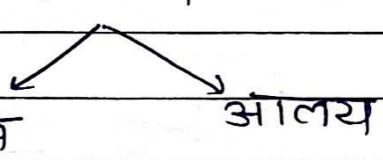

- योगरूढ़

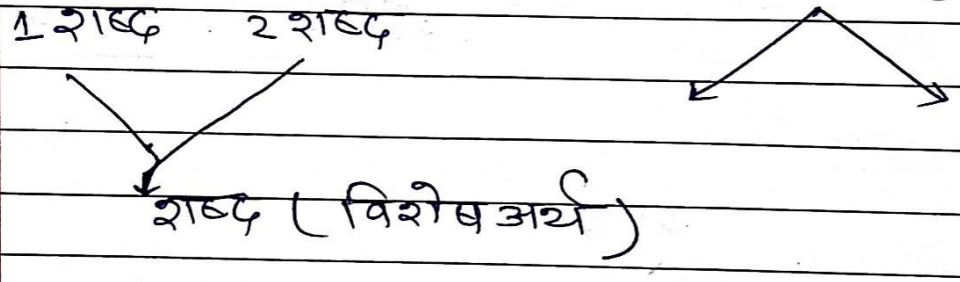

पंकज (कमल)

षडानन (रावण)

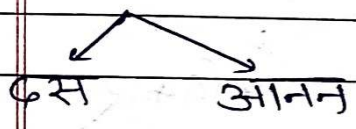

- विकारी शब्द
  - ↳ लिंग, वचन, कारक के अनुसार बदलता है।

e.g.
- बच्चा → बच्ची
- बच्चा → बच्चे

Ajanta
Page No.
Date

अविकारी शब्द

↳ लिंग, वचन, कारक के अनुसार नहीं बदलता है।

e.g. तथा, और, किंतु, परंतु, तेज, अधिक इत्यादि

तत्सम

↳ संस्कृत शब्द = हिंदी शब्द

उदा० ÷ पुस्तक, पुष्प, पृथ्वी, कवि अग्नि, क्षेत्र

तद्भव

संस्कृत शब्द =
- कुछ परिवर्तन
- ↳ हिंदी शब्द है

e.g दुग्ध → दूध, अग्नि → आग, कार्य → काम, कर्पूर → कपूर, हस्त → हाथ

देशज शब्द

↳ भारत के विभिन्न भाषाओं के शब्द जो हिंदी में आ गये।

e.g. पेट, डिबिया, लोटा, पगड़ी, थैला, इडली डोसा, समोसा, चमचम, गुलाबजामुन, खिचड़ी etc

विदेशी शब्द

↳ विदेशी शब्द जो हिंदी में प्रयोग किया जाने लगा।

उदा ÷

अंग्रेजी ÷ कॉलेज, पेंसिल, रेडियो, टेलीविजन, डॉक्टर, टिकट, मशीन, सिगरेट, साइकिल, पेन, लैटरबक्स

फारसी ÷ अनार, चश्मा, जमींदार, दुकान, दरबार, नमक, नमूना, रुमाल, बीमार, बरफ, आदमी, चुगलखोर

अरबी ÷ औलाद, अमीर, कत्ल, कानून, कलम, खत, फकीर, रिश्वत, औरत, कैदी, मालिक, गरीब आदि।

पद - तुलसीदास

Page No.
Date

तुलसीदास (1543 – 1623)

- जन्मस्थान ÷ राजापुर, बांदा, उत्तरप्रदेश
- निवासी ÷ काशी
- मूलनाम ÷ रामबोला
- माता - पिता ÷ हुलसी और आत्माराम दुबे
- दीक्षा गुरु ÷ नरहरि दास
- शिक्षा गुरु ÷ शेष सनातन
- मित्र ÷ रहीम, मानसिंह, नाभ

पद

(1)

कबहुँक अंब अवसर पाइ।
मेरिओ सुधि द्याइबी कछु करुन-कथा चलाइ।।
दीन, सब अँगहीन, छीन, मलीन, अधी अघाइ।
नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी-दास कहाइ।।
बूझिहैं 'सो है कौन' कहिबी नाम दसा जनाइ।
सुनत रामकृपालु के मेरी बिगारिऔ बनि जाइ।।
जानकी जगजननि जन की किए बचन-सहाइ।
तरै तुलसीदास भव तव-नाथ-गुन-गन गाइ।।

महाकवि तुलसीदास सीता को माँ कहकर संबोधित करते हुए कहते है कि हे माँ कभी उचित अवसर पा के आप प्रभु से कोई कारुणिक प्रसंग छेड़ कर मेरी भी याद प्रभु को दिला देना। प्रभु को कहना की आपकी दासी का दास बहुत दीन दशा में है। उसके अंग भी अब ठीक से काम नहीं कर रहे है। वह बहुत दुर्बल है तथा स्वच्छ भी नही रहता। वह पूर्णत: पापों में लिप्त है और आपके नाम का स्मरण करता हुआ किसी प्रकार से अपनी उदर की पूर्ति करता है। हे माँ जब आप मेरी बात प्रभु से करेंगी तो वे पूछेगे कि आप किसकी बात कर रही है आप प्रभु को मेरा नाम और मेरी दशा बता देना क्योंकि अगर मेरी स्थिति प्रभु को पता चल गई तो मेरे बिगड़े हुए काम बन जायेगा। हे माँ! वैसे तो आप पूरे संसार की माँ है। आप अपनी कृपा पूरे संसार पर बरसाती है लेकिन इसके बावजूद अगर आप मेरी सहायता करेंगी तो मैं आपके नाथ का गुण-गान करके भवसागर पार कर जायेंगे।

द्वार हौं भोर ही को आजु।
रट्त रिरिहा आरि और न, कौर ही तें काजु।।
कलि कराल दुकाल दाकन, सब कुभाँति कुसाजु।
नीच जन मन ऊँच, जैसी कोढ़ में की खाजु।।
हृदय हेरि हेरयो सबद बूझ्यो जाइ साधु - समाजु।।
मोहुसे कहुँ कतहुँ कोउ, तिन्ह कह्यो कोसलराजु।
दीनता - दारिद दलै को कृपाबारिधि बाजु।
दानि दसरथरायके, तु बानइत सिरताजु।।
जनमको भूखो भिखारी हौं गरीबनिवाजु।
पेट भरि तुलसिहि जेंवाइय भगति-सुधा सुनाजु

इस पंक्ति में तुलसीदास अपनी दीन - हीन अवस्था का वर्णन करते हुए कहते है कि हे प्रभु! मैं आपके द्वार पर भोर से बैठा हुआ और भीख मांगने वालों की तरह रिरिहा रहा हूँ। हे प्रभु! मुझे आपसे बहुत कुछ नहीं चाहिए मैं आपकी कृपा का एक कौर ही मांग रहा हूँ हे प्रभु! कलयुग में भंयकर अकाल पड़ा है और जो भी मोक्ष को प्राप्त करने का मार्ग है वो पापों से भरा हुआ है। प्रत्येक चीज में दुर्व्यस्थता ही दिखाई पड़ रही है। हे प्रभु मैं एक नीच जीव हूँ जिसकी अभिलाषाएं अथी है जो मुझे उसी प्रकार कष्ट देती है जैसे कोढ़ में खाज दुख दिया करती है। अतः हे प्रभु मेरी विनती स्वीकार करें और मुझे अपनी कृपा का मात्र एक निवाला प्रदान करें। हे प्रभु! हृदय में अत्यंत पीड़ा के साथ मैंने ज्ञानशील साधु समाज से यह बात पूछा कि क्या मेरे जैसे पापी दरिद्र के लिए कोई शरण है और उन्होंने कृपा के सागर श्रीराम का नाम बताया।

हे कृपासिंधु। आपके अतिरिक्त कौन मेरी दीनता और दरिद्रता को दूर कर सकता है हे दशरथ पुत्र श्रीराम। आपके द्वारा ही मेरी बात बन सकती है। हे कृपासिन्धु, हे गरीबों को दुख दूर करने वाले मैं जन्म से ही भूखा भिखारी हूँ और आप दीन के नाथ है। तुलसी जैसा भूखा भक्त आपके द्वार पर बैठा है मुझे अपनी भक्तिरूपी अमृत पिलाकर मेरे ज्ञानरुपी भूख को शांत करें।